Dr. Archana Bharti
Guest Faculty, MMHAPU
MJMC/SEM 1/Paper 101
Date- 14/06/2021

Personal Influence Theory
व्यक्तिगत प्रभाव सिद्धांत

यह सिद्धांत वर्ष 1940 के संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति चुनावों पर हुए एक अध्ययन का परिणाम है। इस सिद्धांत को **पॉल लेजर्सफील्ड** और उनके साथियों ने अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में संचार माध्यमों के प्रभाव का अध्ययन किया। और इसी आधार पर इन्होंने वर्ष 1944 में '**पीपुल्स च्वाइस**' नामक पुस्तक को प्रकाशित किया। अध्ययन के परिणाम से पता चला कि कोई भी मतदाता सीधे तौर जनमाध्यम से प्रभावित नहीं हुआ था। बल्कि मतदाताओं पर आपसी संबंध और अंतरवैयक्तिक संचार का अधिक प्रभाव पड़ा। व्यक्तिगत प्रभाव सिद्धांत के अनुसार, समाज में जनमाध्यमों की अपेक्षा व्यक्तिगत संचार अधिक प्रभावशाली है। प्रो. लेजर्सफील्ड के अनुसार, प्रभावी संचार के लिए संचारक और प्रापक का एक–दूसरे के करीब होना बेहद जरूरी है। इस प्रकार इस सिद्धांत में लोगों पर जनमाध्यम के प्रभाव की अपेक्षा उनके बीच जन संप्रेषण का प्रभाव अधिक पड़ता है। संप्रेषण प्रक्रिया में सूचना का प्रवाह कई चरणों में होता है। बहुत दिनों तक सूचना के एकचरणीय प्रवाह पर ही ध्यान दिया जाता था परंतु धीरे–धीरे विशेषज्ञों ने इसके अन्य चरणों पर भी अध्ययन किया जो इस प्रकार है–

- **संचार का द्विचरणीय प्रवाह सिद्धांत (Two Step Flow of Communication)**

  संचार का द्विचरणीय प्रवाह सिद्धांत इलिहू काट्ज और पाल लेजर्सफील्ड ने वर्ष 1955 में प्रतिपादित किया। दोनों ने बताया कि किसी भी संदेश के प्रसार एवं प्रभाव का निर्धारण एवं संदेश के लिए लोगों के मतों के निर्माण में जनमत नेता अर्थात ओपेनियन लीडर की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जनमत नेता जनमाध्यम और जनता के बीच एक सेतू की तरह होता है। जनमत नेता के अंतर्गत शिक्षक, डॉक्टर, सामाजिक कार्यकर्त्ता, प्रभावशाली स्थानीय व्यक्ति आदि शामिल होते हैं। उदाहरण के तौर पर हम देखते हैं कि यदि किसी शहर या गांव में गंदगी के कारण कोई रोग फैलता है और सरकार जनमाध्यमों के द्वारा सफाई के लिए प्रचार–प्रसार अभियान करवाती है तो इसका असर उतना नहीं होता जितना कि यदि कोई उस शहर या गांव का कोई महत्वपूर्ण सम्मानित व्यक्ति जैसे कि शिक्षक, सरपंच, पार्षद आदि सरकार के संदेश को प्राप्त करके आम लोगों को गंदगी दूर करने के लिए प्रेरित करते हैं तो इसका सबसे अधिक और व्यापक रूप से प्रभाव पड़ता है।

जनमत नेता

जनमत नेता के साथ व्यक्तिगत संबंध

सम्प्रेषण के द्विचरणीय प्रवाह सिद्धांत में प्रमुख रूप से दो बातों पर ध्यान दिया गया है। इसमें जनमत नेता की अवधारणा एवं महत्व को स्थान दिया गया है और दूसरा इस सिद्धांत में व्यक्तिगत सामाजिक दृष्टि स्पष्ट है।

- **संचार का बहुचरणीय प्रवाह सिद्धांत (Multi Step Flow of Communication)**

संचार के इस सिद्धांत को सबसे पहले **इबर्ट एम. रोजर** ने प्रतिपादित किया। इन्होंने इस सिद्धांत के लिए एक प्रतिरूप को प्रस्तुत किया था। यह सिद्धांत इस आधार पर विकसित है कि संचार प्रवाह अनेक चरणों से होता है। जैसे कोई संदेश यदि किसी को प्राप्त हुआ और उस संदेश को दूसरे को प्रेषित किया, दूसरे व्यक्ति ने फिर उसे अपनी पत्नी, बच्चों एवं अन्य लोगों को सम्प्रेषित किया। इस प्रकार जनसंचार से प्राप्त सूचना अंतरवैयक्तिक संप्रेषण द्वारा समाज में प्रवाहित होती है। इस सिद्धांत के पूर्व बहुत दिन तक द्विचरणीय संचार प्रक्रिया ही व्याप्त थी। परन्तु इस सिद्धांत में अनेक कमियां थीं। द्विचरणीय संचार सिद्धांत अनेक चरणों की तरफ संकेत नहीं करता था। इस प्रकार वर्तमान जन संप्रेषण प्रक्रिया में बहुचरणीय संचार प्रवाह की पुष्टि होती है। यह प्रक्रिया जन संदेश के क्षेत्र में अधिक प्रभावी है।

रोजर एंव शूमेकर ने इस तथ्य को उजागर किया कि जन सम्प्रेषण में सम्प्रेषक श्रोता से भिन्न व्यवहार वाला होता है। इनके अनुसार, सम्प्रेषक तभी श्रोता को प्रभावित कर सकता है जब तक उसकी चिंतन प्रक्रिया समान हो। इसमें प्रत्यक्ष और परोक्ष श्रोता तथा संप्रेषक संचार को प्रवाहित एवं प्रवाहित करता है। इस प्रकार सूचना प्रवाह में एक ऐसी भी स्थिति आती है जब वास्तविक प्रथम श्रोता की पुष्टि नहीं हो पाती।

*****